ISSN - 2321 : 2160

nal Peer-Reviewed Referred Journal

the list of UGC Approved Journals No. 47772)

AYUDH

45th Issue
ebruary 2019

Impact Factor : 2.3

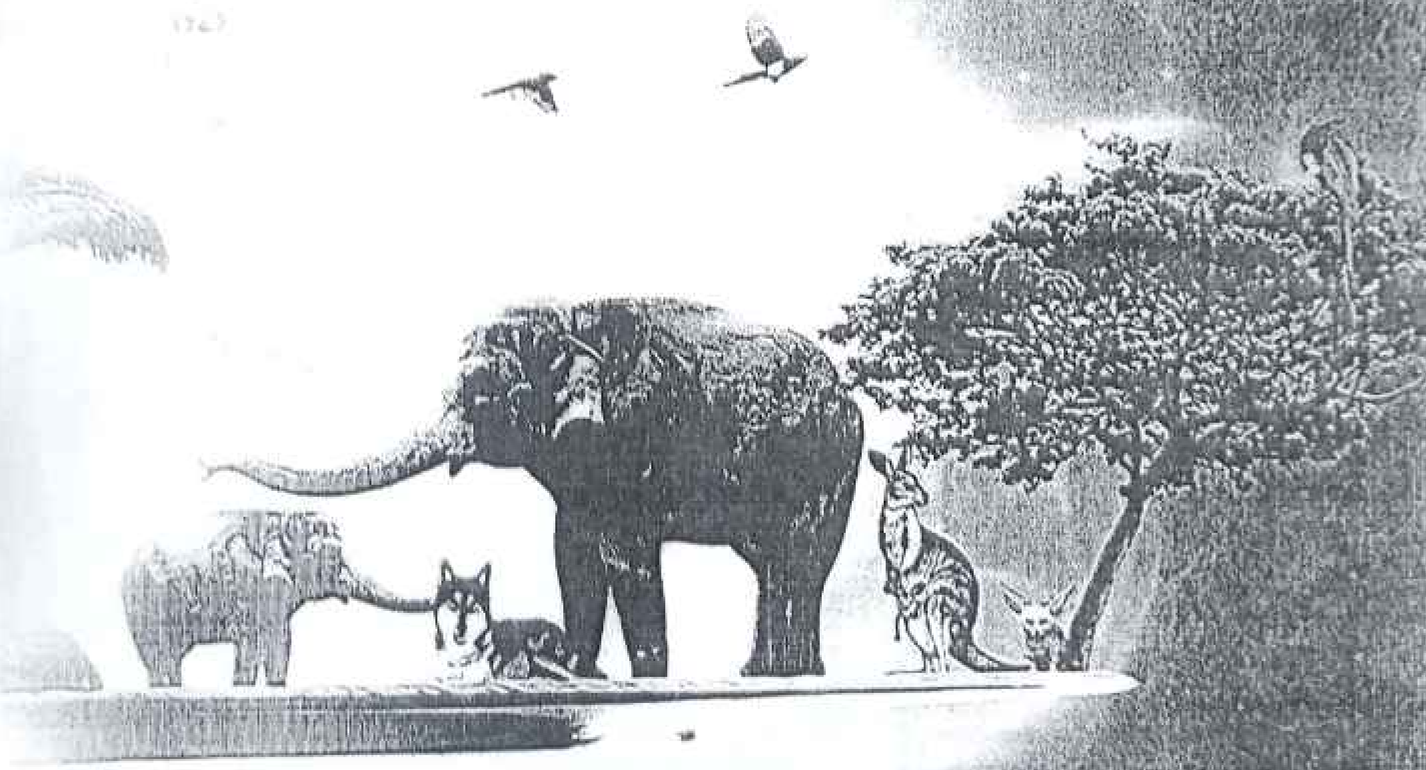

EDITOR

MR. ROHIT PARMAR

Scanned with OKEN Scanner

INDEX

1. સર્વ શિક્ષા અભિયાન : પ્રાથમિક શિક્ષણની એક અનોખી પહેલ
Dharmishtha S. Parmar 1

2. જીવનના ઊંડાણોનો તાગ
ડૉ. દિલીપ આર. અમીન 3

3. A Study of Human Resource Problems and Perception in Selected General Hospitals of Ahmedabad City
Mrs. Artiben Patel 8

4. 'इन्दिरागांधीचरितम्' મહાકાવ્યનું સમગ્રલક્ષી અધ્યયન
બાબુ વેરુ 16

5. યોગ અને એરોબિક કસરતોની મેદસ્વિતા ધરાવતી બહેનોના શરીર બંધારણ પર થતી અસરોનો અભ્યાસ
દર્શના ડી. સેંઘાણી 18

6. દુર્ગાશંકર કેવળરામ શાસ્ત્રીનું ગુજરાતના ઈતિહાસલેખનમાં પ્રદાન (ઈ.સ. ૧૮૮૨–૧૯૫૨)
ડૉ. હસમુખકુમાર વિનોદરાય મકવાણા 22

7. श्रीमद्भगवद्गीतायां शिक्षकः शिक्षा शिक्षार्थिनश्च
जिगर एम. भट्ट 26

8. 'દરિયા' નવલકથામાં પ્રગટતો સમાજવાસ્તવ
મંજુલા આઈ. પરમાર 28

9. Relationship between Work Motivations with Job Satisfaction in School Teachers
Dr. Neerja Gupta 32

10. A Literature Review of Co-operative Bank on Non-Performing Asset
Dhvani K. Dalwadi 33

11. સ્નાતક કક્ષાએ એન.સી.સી. કાર્યક્રમની વિદ્યાર્થીઓના વ્યક્તિત્વ વિકાસ પર થતી અસર
કીજલ ડુંબલ 40

12. हिन्दी काव्य में गांधीवाद
डॉ. प्रफुल्लाबहन मोहनभाई पटेल 45

13. Management accounting
Pravinkumar J. Savaliya 47

14. વૈશેષિક દર્શનમાં પ્રમાણવિચાર
ડૉ. આર. ડી. પટેલ 50

15. પ્રતીયમાન અર્થ : ધ્વન્યાલોકના આલોકમાં
સાહેરાબાનુ અનવરખાન પઠાણ 53

16. ભારતનો વિદેશ વેપાર
ડૉ. મનિષ આર. પટેલ અને શીતલ આર. માળી 57

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2321-2160

12

हिंदी काव्य में गांधीवाद

डॉ. प्रफुल्लाबहन मोहनभाई पटेल

मानव के आदर्श एवं युग प्रणेता महात्मागांधी एक ऐसे महापुरुष थे जो बीसवींशताब्दी के विश्व में महानतम विभूति थे। उनके आलोकमय पूर्ण व्यक्तित्व और सुचिंतित जीवन दर्शन से न केवल भारत वर्ष बल्कि संपूर्ण विश्व प्रभावित हुआ। उन्होंने सामाजिक विचारधारा में युगांतर उपस्थित कर दुःखी -पीड़ित मानवता के हृदय में एक नवीन आशा और उत्साह का संचार किया। परतंत्र भारत को स्वतंत्र कराने में अपने जीवन के सुखों को त्यागकर मानवमात्र की स्वतंत्रता की जीवन रेखा स्थापित की। इन्होंने वर्ग संघर्ष, रक्त क्रान्ति, घृणा युद्ध और जय से भरे विश्व में सत्य, अहिंसा, प्रेम, शांति और अभय की जीवन्त प्रतिष्ठाकर आदर्श जीवन को एक कीर्तिमान स्थापित किया। कई कवियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है और उनके साहित्य में वह किस प्रकार परिलक्षित होता है । उनका उदाहरण निम्नलिखित है-

रामचरितमानस में गांधीवाद :-

महात्मा गांधीजी ने अस्पृश्यता निवारण के लिए भी बहुत सारे कार्य किए हैं। तो एसे अस्पृश्यता निवारण हमें मध्यकालीन काव्य तुलसीदास कृत रामचरितमानस में भी देखने को मिलते हैं। जैसे कि- माता सीताजी का रावण की ओर से अपहरण होता है। दोनों भाई सीताजी की खोज में वन में घूम रहे हैं। घूमते -घूमते वे शबरीजी के आश्रम में पधारे। शबरीजी ने श्री रामचंद्रजी को घर आते देखकर बहोत ही प्रसन्न हो गई और दोनों भाइयों के चरणों में लिपट पड़ी। वे इतनी प्रसन्न हो गई कि उसे बोला नहीं जाता। बार-बार चरण कमलों में सिर नवा रही हैं। बाद में वे दोनों के पैर धोती है-

सादर जल लै चरन पखारे।
पुनि सुंदर आसन बैठारे । 1 (अरण्यकाण्ड-दो-33 चौ-5)

पैर धोकर सुंदर आसनों पर बिढाती है और कहती है कि मैं आपकी किस प्रकार सेवा करूं। मैं निम्न जाती की और अत्यंत मंदबुद्धि हूं वह कंद मूल और फल लाकर श्री राम जी को दिये-

"कंदमूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानी।।"2 (अरण्यकाण्ड-दो-34)

शबरी ने अत्यंत रसीले और स्वादिष्ट कंद मूल और फल लाकर श्री रामजीको दीये। प्रभुने बार-बार प्रशंसा करके उन्हें प्रेम सहित खाया। प्रभु श्रीराम शबरी को कहते हैं। मैं आपको अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन और मनमें नवधा भक्ति धारण कर। नवधा भक्ति प्रभु रामने शबरी को कायी और कहा की । हे भामिनि मुझे वही अनंत भक्ति अत्यंत प्रिय है। फिर तुझमें तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ है। यहां शबरी रामको अधिक प्रिय लगी। गोस्वामी तुलसीदासजीने भक्तिकालीन निम्नजाति की स्त्री की हीन दशा एवं मानसिक अछूता सभी अस्पृश्यता का निवारण किया है। जो मात्र उनके परछाई पड़ने पर भी उपयोगी नहीं होते थे, उस समय में तुलसीदास जी ने प्रभु श्री राम का माध्यम लेकर प्रभु राम के पास बिठाना गले लगाना, कंद, मूल और फल खाना आदि के माध्यम से यह जातिवाद अर्थात अस्पृश्यता निवारण का प्रयत्न किया।

महाप्रस्थान में गांधीवाद-

नरेश मेहता की कृतियों में इन्ही गुणों का अभिव्यंजन हुआ है, जो गांधीवाद की विश्व वेदना और मानवता प्रेम से अभिभूत होकर नरेश मेहता के राम युधिष्ठिर आदि सब प्रजा पुरुष के रूप में भारतीय संस्कृति के रक्षक के रूप में हमारे सामने आते हैं। महाप्रस्थान युधिष्ठिर स्मृतियो में डूबे निवारण के लिए जा रहे हैं और उनके पीछे पांडव दल चला जा रहा है उनकी आसक्ति किसी में नहीं है। वे भीम से कहते हैं

"भीम
मैं राज्यान्वेषी नहीं
मूल्यान्वेषी रहा हूँ।
राज्य जैसी अपदार्थता के लिए
....
सौ वर्ष के वनवास के बाद भी
कौरव हमें अपना अधिकार दे देंगे
तो सच मानो भीम!
मैं कभी युद्ध के लिए सहमत न होता।"3

भीम पूछते हैं कि यदि न्याय आपके पक्ष में था तो आपने कौरवों से राज्य पहले ही क्यों नहीं छीन लिया? युधिष्ठिर कहते हैं कि मुझे राज्य का मोह नहीं है। मैं राज्यन्वेशी नहीं मानवीय मूल्यान्वेशी हूँ। राज्य जैसी तुच्छ वस्तु के लिए रक्त बहाना मुझे पसंद नहीं। युधिष्ठिर कौरव का नाश नहीं चाहते। वे कहते हैं कि साम्राज्य से भी मनुष्य को बड़ा मानता हूं और मनुष्य की आत्मा में बसने वाले देवता में विश्वास रखता हूँ। हे भीम उस देवता के जागृत होने के लिए मैं अनन्तकालतक रुकने के लिए तैयार हूँ।

शबरी काव्य में गांधीवाद -

भारतीय जनमानस में प्राचीन काल से गांधीवादी विचारधारा का समावेश हुआ है। गांधीवाद के कारण ही साहित्य में सत्य, अहिंसा, शांति, जैसे विचारों का अविष्कार हुआ। 'शबरी' में शबरी हिंसा से घृणा करती है। उसे अपनी ही शबरी जाति की हिंसा, लूटपाट, हत्याएं अनुचित लगती है। उसे पशु हिंसा से भी घृणा है। कहते हैं पशुओं कांपना उसे स्वप्न में दिखाई देता था इर्द-गिर्द का पूरा वातावरण ही शबरी का असह्य है-

"बचपन में भी जब सखियाँ,
पेड़ों पर थी चढ़ जाती,
नीड़ों से कच्चे अण्डे, लेकर वे सब खा जाती।
यह देख-देख शबरी को, जाने कैसा सा लगता,
कटते पशुओं का काँपना, उसको सपने में दिखाना। "4

नरेश मेहताने अस्पृश्यता निवारण शबरी के माध्यम से करने का प्रयत्न किया है। वे कहते हैं-

"क्या धर्म तत्व से ऊँची है वर्णाश्रम मर्यादा ?
तब व्यर्थ तपस्या-पूजन यह गंगा भी है शूद्रा। " 5

यहाँ कहते हैं कि क्या धर्म-तत्व से वर्णाश्रम मर्यादा ऊँची है, तब तो व्यर्थ में तपस्या- पूजन गंगा भी तो शूद्रा ही है। राम ने शबरी को झूठे बेर भी खाए थे तो वह भी भगवान होते हुए भी शूद्र हो जाना चाहिए, किंतु नरेशमेहता ने राम के माध्यम से अस्पृश्यता निवारण का प्रयत्न किया है।

रश्मिरथी काव्य में गांधीवाद-

रश्मिरथी में गांधीवाद की गहरी झलक दिखाई देती है। कवि का ध्यान ऐसे चरित्रों की और गया जो हजारों वर्षों से दलित, पीड़ित, प्रताड़ित है। उनका कर्ण उपेक्षित एवं पीड़ित मानवता का प्रतिनिधि बनकर खड़ा है। रश्मिरथी का कर्ण अन्याय सहने वाला नहीं वरना अपने पौरुष के सहारे अपना उत्थान करने वाला विद्रोही है। वह दलितों, पीड़ीतों, सामाजिक अन्याय से त्रस्त लोगों के सामने अपना आदर्श रख उनमें नई चेतना जगाता है। इस दलितों के नायक कर्ण के बारे में उसकी मृत्यु पर भगवान कृष्णा धर्म से कहते हैं-

"मगर, जो हो, मनुज सुवरिष्ठ था वह।
हृदय का निष्कपट, पावन प्रिया का,
दलित- तारक समुद्धारक क्रिया का।
मनुजता का नया नेता उठा है।
जगत् से ज्योति का जेता उठा है। " 6

काव्य का हेतु प्राचीन कवियों की भाँति यश कीर्ति, धन मान्यता व मनोरंजन जैसा कोई हेतु दिनकर प्रस्तुत काव्य के मूल में दिखाई नहीं देता। वास्तव में यहाँ कवि का हेतू है युग के उन जाति भेद को नष्ट करना, भारतीयों में समानता, एकता, बंधुता, लाना और राष्ट्रपिता गांधी की नव चेतना का निर्माण करना इस काव्य के प्रेरक तत्व है

शम्बूक काव्य में गांधीवाद-

शम्बूक के माध्यम से कवि ने मानव जाति के पीड़ित वर्ग का स्वर बुलंद कर इनकी समस्याओं को उद्घाटित किया है। पुरानी परंपरागत शम्बूक कथा को लेकर कवि ने यह दलित वर्ग की समस्या को राष्ट्रीय धरातल पर प्रस्तुत किया है। गांधीवादी विचारधारा का अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है अहिंसा। आधुनिक कवियों की रचनाओं में यह तत्व भी बड़ी प्रखरता से प्रतिबिम्बित है। हिंसा की घोर निंदा की है। इस संदर्भ में शम्बूक की यह पंक्तियाँ उल्लेखित है-

" मात्र हिंसा नहीं मानव-स्वभाव,
हैं अहिंसक और-और उपाय,
दण्ड के हैं और बहुत विधान। "7

गांधीवाद का एक महत्वपूर्ण तत्व श्रम है। गांधीवाद में राजा और प्रजा के संबंध है इन दोनों का भी समावेश है।

पंचवटी काव्य में गांधीवाद-

मैथिलीशरण गुप्त जी ने गांधीवाद को ध्यान में रखकर खुद के परिश्रम का महत्व दिया है। पंचवटी में सीता के माध्यम से परिश्रम का महत्व बताते हैं-

" अपने पौधों में जब भाभी
भर भर पानी देती है,
खुरपी लेकर आप निराती
जब वे अपनी खेती है।
पाती है तब कितना गौरव,
कितना सुख, कितना संतोष।
स्वावलंब की एक झलक पर
न्योछावर कुबेर का कोष।। "8

सीताजी पौधों में खुद पानी देती हैं, खुरपी लेकर नीराती है, तब वे गौरव पाती हैं संतोष होती है, स्वावलम्बन की झलक पाकर कुबेर का कोष समझती है। यह श्रम का महत्व और स्वावलंबन का महत्व दिया है।

इसी तरह हिंदी काव्य में सत्य, अहिंसा, करुणा, ममता, अस्पृश्यता, स्वावलंबी, श्रम का महत्व और विश्व बंधुत्व की भावना पर जोर देते हुए गांधी विचार दर्शन की पुष्टि की है।

संदर्भः-

1. गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस अरण्यकाड
2. गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस अरण्यकाड
3. श्री नरेश मेहता, महाप्रस्थान स्वाहा पर्व,पृ.88
4. श्री नरेश मेहता, शबरी तपस्या, पृ.27
5. श्री नरेश मेहता, शबरी परीक्षा, पृ.47
6. रामधारी सिंह दिनकर, रश्मिरथी, पृ.116,117
7. जगदीश गुप्त, शम्बूक, छत्र शीश, पृ.72
8. मैथिलीशरण गुप्त, पंचवटी, पृ.24

Scanned with OKEN Scanner

ISSN - 2321 : 2160

International Peer-Reviewed Referred Journal

(Formerly in the list of UGC Approved Journals No. 47772)

AYUDH

Volume-13

65th Issue

October 2020

Impact Factor : 3.5

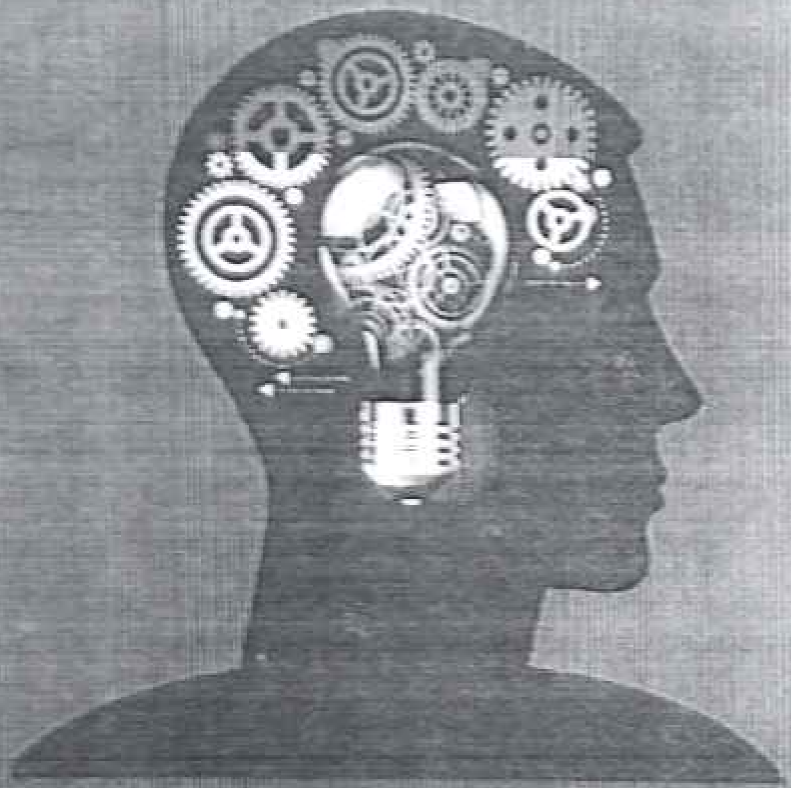

Editor

Mr. Rohit Parmar

CS Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

INDEX

1. ધંધાકીય વટાવ અને તેનો વ્યવહારિક જીવનમાં ઉપયોગ
   અજયકુમાર એચ. ચૌહાણ 1
2. વિકાસશીલ સમાજ અને મનુષ્ય
   ડૉ. ભેમાભાઈ એ. રબારી 4
3. સ્ત્રીભ્રૂણ હત્યા એક વિરાટ સમસ્યા
   ડૉ. બીના એસ. ગોરવાડીયા 6
4. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की साहित्य साधना
   डॉ. दीपक सोन्दरवा 9
5. બી.એડ. કૉલેજોના પ્રશિક્ષણાર્થીઓના પ્રાયોગિક પાઠો અંગે પ્રશિક્ષકોના અભિપ્રાયો
   Opinion of Teacher Educators of B.Ed. Colleges Regarding Practice Lessons of Students Teachers
   દિપિકાબેન કિશોરભાઈ સોલંકી 14
6. ધર્મગ્રંથોમાં 'અહિંસા'નું મહિમા દર્શન
   ડૉ. હેતલ પરમાર 17
7. सिन्दूर की होली नाटक में विविध समस्याएँ
   हुमैराबानो ए. अन्सारी 20
8. ભારતીય દર્શનોમાં મોક્ષવિચાર
   ડૉ. જ્યોતિબેન રણછોડભાઈ પટેલ ....
9. જગદીશ ત્રિવેદીનું રંગભૂમિક્ષેત્રે પ્રદાન
   ડૉ. કલ્પેશ ત્રિવેદી ....
10. **Effect of Exchange rates on Nifty 50 Index during the year 2019**
    Komal J. Chavda ....
11. कब तक पुकारूँ उपन्यास में मानवीय संवेदना
    डॉ. कोमल एम. गावित ....
12. **A Statistical Analysis for E-purchasing Manner of College Students about Electronic items**
    Prof. Krunal P. Rajput ....
13. **A Study of Employees' Quality of Work Life in Automobile Industry**
    Dr. Mayuri K. Desai ....
14. આદિવાસી એટલે શું ? આદિવાસી સ્ત્રીઓની શૈક્ષણિક સમસ્યા
    નાગજીભાઈ કે. ભોભ ....
15. पाश्चात्य नाटककारों का मिथकीय चिन्तन
    डॉ. पारुल टी. चौधरी ....
16. मानस में आदिवासियों का योगदान
    डॉ. प्रफुल्ला बहन पटेल ....
17. ગુજરાતમાં સાક્ષરતા અને અસમાન જાતિપ્રમાણ (તુલનાત્મક અભ્યાસ)
    Literacy and Gender Inequality in Gujarat (Comparative Study)
    Pratiksha M. Devmorari ....
18. दूरदर्शन और विज्ञापन
    डॉ. प्रवीण एम. चौधरी 71
19. मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में परंपरा / संस्कृति में आँचलिकता
    डॉ. पुष्पा डी. वाघेला 72
20. 'ટપાલ' પ્રતિક્ષાએ વહોરેલી એકલતાની પીડા
    સુશીલા ધનજી વાઘમશી 76

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

मानस में आदिवासियों का योगदान

डॉ. प्रफुल्ला बहन पटेल

रामचरितमानस के अनुसार आदिवासी जाति के लोग कोल-भील, भील, निषाद, वनचर, वनवासी और [illegible] के समाज का बहुत ही उल्लेख है। ये वनचर जीवन में भी आगे थे तथा अपनी प्रिय के हित के लिए युद्ध हेतु तैयार हो जाते थे। भरत में जब श्री रामचंद्र जी को मनाने के लिए अयोध्यावासी और गुरु परिवार को साथ लेकर चले हैं, शृंगवेरपुर पहुँचते हैं, उसी समय निषाद को पता चलता है कि वह प्रभु श्री राम के पास जाते हैं। उसी [illegible] उसके मन में विचार आता है कि यह सब लोग क्यों आ रहे हैं? [illegible] कदाचित वे युद्ध करने के लिए तो नहीं आ रहे हैं। तब [illegible] के सब घाट को बंद करवा देते हैं, युद्ध के लिए तैयार हो जाता है। ये शगुन - और अपशगुन का विचार भी करते थे और अनेकों प्रकार से सेवा करते हैं। उल्लेख [illegible] में तुलसीदास जी ने किया है, निम्नलिखित हैं -

(1) शृंगबेरपुर में निषाद और पुरवासी द्वारा सेवा
(2) केवट प्रेम द्वारा गंगा पार करना
(3) चित्रकूट निवास दौरान सेवा
(4) वनवासियों की ओर से भरत मंडली की सेवा
(5) शबरी द्वारा श्री राम सेवा

रामचरितमानस के उक्त प्रसंग द्वारा तुलसीदास जी ने श्री राम की वनयात्रा दौरान आदिवासी समाज ने किस प्रकार उनकी सेवा की उसका उल्लेख किया है।ये चारों प्रसंग अयोध्या कांड में से लिया गया है। अंतिम प्रसंग अरण्यकांड में से लिया गया है। अब हम एक एक प्रसंग का विस्तार से देखेंगे।

(1) शृंगबेरपुर में निषाद और पुरवासी द्वारा सेवा

अयोध्या से निकलकर प्रभु श्री राम 14 वर्ष की वनवास के लिए निकलते हैं, सुमंत, श्री राम, लक्ष्मण और सीता सहित श्री राम शृंगबेरपुर में पहुंचते हैं, वहां गंगा नदी को देखकर श्री राम जी ने रथ से नीचे उतर कर दंडवत की। लक्ष्मण जी, सुमंत और सीता जी ने प्रणाम किया, सब ने स्नान किया, जिसके माध्यम से मार्ग का थकान दूर हो गया, पवित्र जल पीते ही मन प्रसन्न हो गया। निषाद राज गुरु को पता चला कि राम आए हैं तब वे आनंदित होकर अपने प्रिय जनों और भाई बंधुओं को बुला लिया।

"लिए फलमूल भेंटभरी भारा।
मिलन चलेउ हियहरषुअपारा।"2

भेंट में फल, कंद लेकर मिलने गए उसके हृदय में आनंद का पार नहीं रहा। दंडवत करके भेंट सामने रखकर वह अत्यंत प्रेम से प्रभु को देखने लगा। श्री राम जी ने स्नेह वश होकर निषाद को अपने पास बिठाकर कुशल पूछे। निषाद ने उत्तर दिया - हे नाथ! आपके दर्शन से कुशल हैं। आज मैं भाग्यवान पुरुषों की गिनती में आ गया हूं। आप कृपा करके आप शृंगवेरपुर में पधारिए, तब श्री राम चंद्र जी ने कहा - हे सुजान सखा! तुमने जो कुछ कहा सब सत्य है, परंतु पिताजी की आज्ञा है - मुझे 14 वर्ष तक मुनियों का व्रत और वेश धारण कर मुनियों के योग्य आहार करते हुए वन में ही बसना है, गांव के भीतर निवास करना उचित नहीं है। यह सुनकर निषाद के मन में बहुत दुख हुआ, निषाद ने मन में ही अनुमान किया, अशोक के पेड़ के नीचे ठहरना श्रीराम के लिए उचित है। यह स्थान पर वह स्थान श्री राम जी को ले जाकर दिखाया। श्री राम ने देखकर कहा यह स्थान सब प्रकार से सुंदर है पुरवासी लोग वंदना करके अपने-अपने घर लौटे। निषादराज वहीं ठहरे और रघुनंदन की सेवा में उपस्थित रहे।

सुहावे कुश और कोमल पत्तों की कोमल और सुंदर साथ ही सजा कर बिछा दी और पवित्र, मीठे और कोमल देख देख कर दोनों में भर भर कर फल मूल और पानी रख दिया। जब श्री रामचंद्र जी सो गए तब लक्ष्मण धनुष

Scanned with CamScanner

Scanned with OKEN Scanner

बाण सज कर विरासन में बैठकर पहरा देने लगा। यह देखकर निषाद ने पहरेदार [illegible] कुशलता और प्रेम से [illegible] जगह नियुक्त कर दिया और वो निषाद राज कमर में तरकश बांधकर तथा धनुष पर बाण चढ़ाकर लक्ष्मण जी के पास बैठ गया।

श्री राम वनवास के दौरान निषाद और वहां के लोगों ने [illegible] प्रकार की सेवा की।

(२) केवट प्रेम द्वारा गंगा पार कराना -

सुबह होते ही शृंगवेरपुरसे निकलना चाहते है। श्री राम ने केवट से नाव मांगी, पर केवट [illegible] कहने लगा-मैंने तुम्हारा मरना जान लिया है, तुम्हारे चरण कमल की धूल से ही जड़ पत्थर भी स्त्री बन जाती है। मेरी इस नाव से पूरे परिवार का भरण पोषण करता हूं। मेरे पास और कोई धंधा नहीं है, यदि तुम पार [illegible] चाहते हो तो मुझे पहले आपके चरण धोलेने दो, उसके बाद मैं आपको नाव से गंगा पार कर [illegible] कोई स्वार्थ नहीं है किंतु वे तो प्रेम के माध्यम से वह प्रभु राम के पैर धोकर जन्म जन्म के पुण्य [illegible] है। वह कहते है तुलसीदास जी के शब्दो में तुलसीदास जी के शब्दों में -

"पद कमल धोय चढ़ाई नावननाथउत्तर आई नाही।

मुखी राम राव री आन दशरथ शपथ सब साची कहो।"

केवट का प्रेम देखकर प्रभु राम सीता और लक्ष्मण जी और देख कर हंसते है। प्रभु राम प्रेम [illegible] कहते हैं तू वही कर जिससे तेरी नाव नाबनजाय। जल्दी पानी ला और पैर धो ले। देर हो रहे है, पार उतार [illegible] अत्यंत आनंद और प्रेम से भगवान श्री राम के चरण धोने लगे। केवट श्री राम जी के पैर धोकर परिवार सहित [illegible] जल को पीकर महान पुण्य प्राप्त करके भवसागर पार करके फिर आनंद पूर्वक श्री राम को गंगा जी के पार [illegible] गया।केवट ने गंगा पार करा कर श्री राम को दंडवत किया। यह देख कर राम को मन में संकोच हुआ कि [illegible] को कुछ नहीं दिया तब सीताराम की बात समझ गई तुरंत ही अंगूठी निकालकर राम को दी राम को दी [illegible] दी। राम ने केवट को दी लेकिन केवट ने मना किया बहुत आग्रह किया पर उन्होंने नहीं ली। श्री राम ने [illegible] भक्ति का वरदान देकर केवट को विदा किया। यह केवट प्रेम द्वारा श्री राम - लक्ष्मण और सीता को गंगा पार [illegible] के सेवा भाव व्यक्त किया।

(३) चित्रकूट निवास दौरान सेवा -

सुमेरपुर से निकलकर वाल्मीकि जी के आश्रम में पहुंचते है। श्री राम ने निवास करने के लिए वाल्मीकि [illegible] से पूछा मुनि ने कहा - हे सूर्य कुल के स्वामी सुनिए, अब मैं निवास स्थान बतलाता हूं आप चित्रकूट [illegible] निवास कीजिए, वहां आपके लिए सब प्रकार की सुविधा है। स्थान को देखकर श्री रामचंद्र जी को आनंद [illegible] जब देवताओं को पता चला की, यह स्थान प्रभु राम को रहने के लिए पसंद आया है तब सब देवता [illegible] वेश में विश्वकर्मा को साथ लेकर आए और उन्होंने सुंदर पत्तों और घरों की सुंदर कुटिया बना दी -

कोल की रातवेस सब आहर अन्छे।

रचे परन तुर्न सदन सुहाये।"

इस प्रकार चित्रकूट निवास के दौरान कोल भीलों के द्वारा अनेक प्रकार की सेवा प्रभु श्री रामचंद्र जी सीता और लक्ष्मण जी की हुई।

(४) वनवासियों की ओर से भरत मंडली की सेवा -

भरत जी प्रभु श्री राम लौटने के लिए पूरा परिवार और अयोध्या वासियों सहित जब वन मे जाते है तब वनवासियों उनकी अनेकों प्रकार से सेवा करते हैं। उदाहरण -

भरी-भरी परनपूटीराची।

कंदमूल फल अंकुर जोड़ी।"

कोल, किरात और भिल आदि वन के रहने वाले लोग सुंदर दोनो बनाकर उसमें भर भर के कन्दमूल और अंकुर आदि देते है यह सबको विनय और प्रणाम करके उन चीजों के नाम बता कर देते है लोग उनका बहुत दाम देते है पर भी नहीं लेते और कहते हैं आप साधु है आप हमारे प्रेम को देखें हमारे प्रेम का तिरस्कार ना कीजिए। हमारे

Scanned with CamScanner
Scanned with OKEN Scanner

प्रेम देखकर कृपा करके थोड़ा और अंकुर नीतिज्ञ आप वन में पधारे आपकी सेवा कर करते हैं। किसी की किस्मत में इन लकड़ी और पत्तों तक सीमित ही है हमारी तो बस यही बड़ी बड़ी सेवा है।

(४) शबरी द्वारा श्री राम सेवा -

माता सीता जी का रावण की ओर से हरण होता है। दोनों भाई सीता जी की खोज में वन में घूम रहे हैं, घूमते घूमते हुए शबरी जी के आश्रम में पधारे। शबरी जीने श्री राम चंद्र जी को घर आते देखकर बहुत ही प्रसन्न हो गई और दोनों भाइयों के चरण में लिपट गयी। उसे बोला नहीं जाता पेड़ ऊपर सुंदर स्थानों पर [illegible] है और कहती है कि मैं आपकी सेवा किस प्रकार करूं मैं नीच जाति की और अत्यंत मंद बुद्धि की हूँ। कंदमूल और फल लाकर श्री राम चंद्र जी को दिया श्री राम ने बहुत ही प्रेम से खाया।

गुहा निषाद, केवट भिल कोल आदि के माध्यम से गोस्वामी तुलसीदास जी ने अति कालीन निम्न जाति की उन पुत्र की हिना दशा एवं मानसिक लघुता ग्रंथी अस्पृश्यता का निवारण किया। श्री राम चंद्र जी जब वनवास यात्रा गए उसी समय भी निम्न वर्ग के लोगों ने अनेक प्रकार की सेवा की और जन्मों जन्म के भवसागर करने का आनंद लिया इस प्रकार श्री राम जी की वनवास यात्रा दौरान वन वासियों ने अनेक प्रकार से सेवा की।

o संदर्भ ग्रंथ सूची -

(१) रामचरितमानस अयोध्या कांड, दो - ८५चौ - १

(२) अयोध्या कांड, दोहा - ९९ छं - १

(३) अयोध्या कांडदोहा - १३२

(४) अयोध्या कांडदोहा-२४९चौ-१

डॉ. प्रफुल्ला बहन पटेल

Scanned with OKEN Scanner

SURABHI

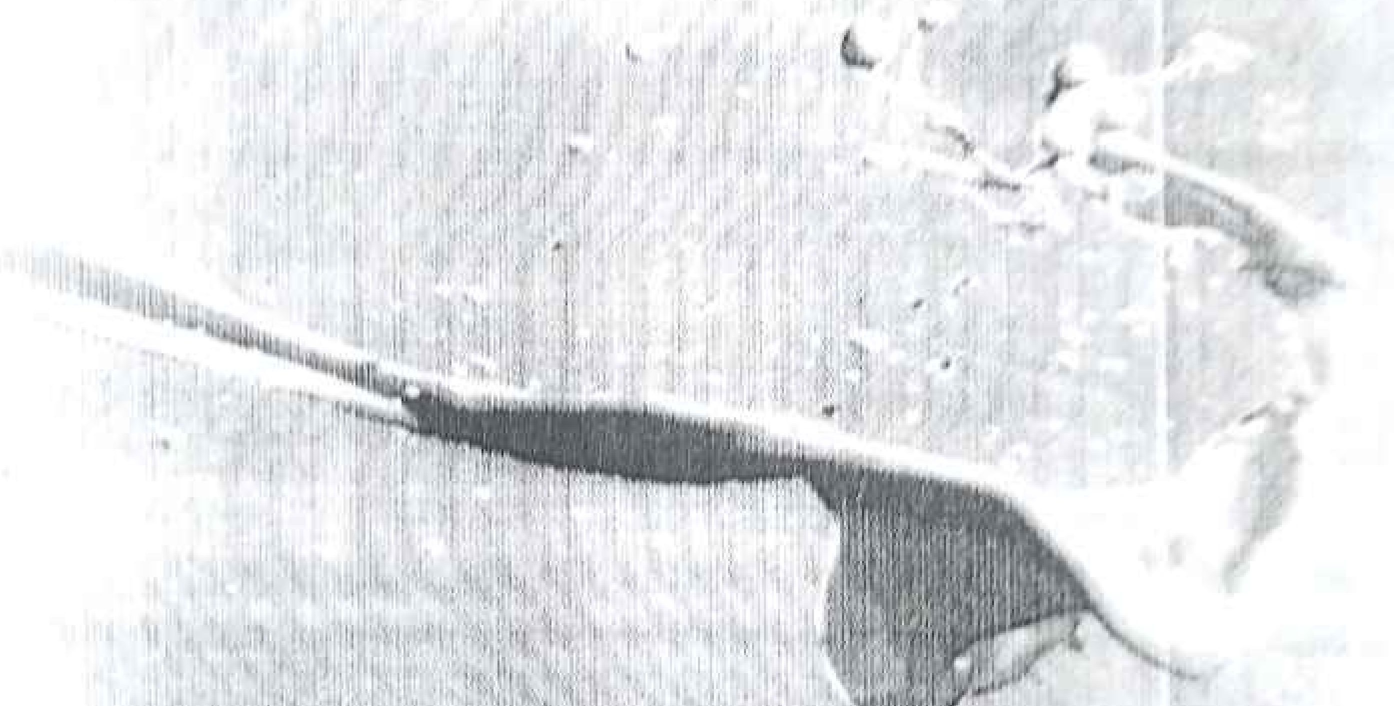

Editor

Mr. Rohit Parmar

INDEX

1. હીરાઉદ્યોગમાં સ્ત્રી કામદારોની કાર્ય પરિસ્થિતિ : એક સમાજશાસ્ત્રીય અધ્યયન (ભાવનગર શહેરના સંદર્ભમાં)
   ડૉ. અંકિતા ડી. સાવડીયા 1
2. **Portrayal of Anarchy and Brutality – A Study of Khushwant Singh's *Train to Pakistan***
   Dr. Alkesh Pravinchandra Trivedi 3
3. नयी सदी की हिन्दी दलित आत्मकथाएँ
   डॉ. भानुबहन ए. वसावा 6
4. **Relation between the US Dollar, Sterling Pound and Euro rates in Rupees with BSE 100**
   Komal J. Chavda 9
5. મનુસ્મૃતિમાં થયેલ સંસ્કાર ચર્ચા પર નોંધ
   મુકેશ કાન્તિલાલ આમલિયા 14
6. मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में आँचलिकता
   डॉ. नीता डी. वाघेला 16
7. रामचरित मानस में स्वप्न से प्राप्त भविष्य कथन
   डॉ. परेश एम. गामी 18
8. कबीर: एक समाज सुधारक के रूप में
   डॉ. प्रफुल्लाबहन पटेल 20
9. મહિલા કેન્દ્રિત હિન્દી ફિલ્મોનું સમાજશાસ્ત્રીય વિશ્લેષણ (વર્ષ 2014 થી 2020 સુધી)
   મનિષા એમ. દેવમોરારી 22
10. राजी सेठ की कहानियों में आधुनिक युगबोध
    डॉ. पुष्पा डी. वाघेला 25
11. अपनी सलीबें उपन्यास में चित्रित समस्याएँ
    डॉ. नवीनचंद्र डी. वाघेला 27
12. राजेन्द्र यादव की कहानियों में मध्यमवर्गीय समाज जीवन की विडंबना
    डॉ. प्रकाश बी. बारड 30
13. शंकर शेष कृत : कालजयी नाटक में राजनीतिक चेतना
    रूपसिंह नारसिंह बारीया 33
14. ईशोपनिषदि ज्ञानमार्गः कर्ममार्गश्च
    समर्थ ओझा 34
15. ડૉ. આંબેડકરનું સમાજશાસ્ત્ર
    SANGITABEN GAMANBHAI GAMIT 37
16. **Nature: A Permanent Character in the Works of Thomas Hardy**
    Sheelaba Bhimdevsinh Gohil 39
17. મહિલા અને બાળ આરોગ્ય: સામાજિક અને સાંસ્કૃતિક પરિબળો નર્મદા જિલ્લાના દેડીયાપાડા તાલુકાના સંદર્ભમાં
    Dr.Vakhatsinh H. Gohil 42
18. **STUDY OF SOCIAL SUPPORT AMONG H.S.C STUDENTS**
    VIJAY NANDANIYA 45
19. અદ્રશ્ય અગ્નિ
    પ્રા. પુર્વીકુમારી અજીતભાઈ પટેલ 48
20. રસ–પારદ દ્વારા સુવર્ણવિદ્યા
    વિનોદકુમાર નાથુભાઈ માછીરાણા 50

Scanned with OKEN Scanner

कबीर: एक समाज सुधारक के रूप में

डॉ. प्रफुल्लाबहन पटेल

कबीर का आगमन ऐसे समय में हुआ था जब पूरा समाज जातिवाद ऊंच-नीच का भेद, बाहरी आडंबर आदि को महत्व दे रहे थे, कबीर ने यह अपनी आंखों से देखा और उसका अनुभव भी किया। अनेक बार उन्होंने निरूपण किया कि यह जो सब भेद है वह तो मनुष्य ने ही किया है, इसे तो निकालना जरूरी है वह समझ कर कबीर अनेक क्रांतिकारी का रूप धारण करके जातिवाद धार्मिक पाखंड बाह्य आडंबर की घोर विषमता विविध प्रकार के जालों से जीवन व समाज को निकालने का सफल प्रयास कर एक युग प्रवर्तक की चर्चा एवं सार्थकता का परिचय दिया है।

कबीर का प्रयोजन था मानव समाज को उपदेश देना और सही रास्ता दिखाना, कबीर ने समाज में देखा और उसे लगा कि यह गलत है तो उन्होंने उनकी ओर जनता का ध्यान दौरा और कहा यह सच है, यह गलत है, इतना ही नहीं उन्होंने उनका घोर विरोध भी किया। कबीर ने समाज में व्याप्त जाति प्रथा छुआछूत एवं ऊंच-नीच भावना पर प्रहार करते हुए कहा कि जन्म के माध्यम से मनुष्य को ऊंचा या नीचा नहीं हो सकता वे अपने कर्म पर आधारित होता है। जो अच्छे कर्म करता है वह ऊंचा और जो कुछ ऊंच कुल में जन्म लेने के बाद भी नीच कर्म करते हैं वह नीच कहलाते हैं-

"ऊंचे कुल का जनमिया, करणी ऊंची ना होय।
सुबरन कलश सुरा भरा, साधु निंदे सोई।"१

यदि ऊंचे कुल में जन्म लेने वाले व्यक्ति के कर्म उचित ना हो तो साधु उनकी भी निंदा करते हैं जैसे सोने का घड़ा मदिरा से भरा हो तो वह भी निंदनीय होता है।

कबीर जाति भेद में नहीं मानते उनकी दृष्टि में ब्राह्मण और शूद्र समान है वह कहते हैं-

"जाति न पूछो साधु की पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ी रहन दो म्यान।"२

कबीर ने कहा कि जब ब्राह्मण और शूद्र की रगों में बहने वाले खून में कोई भेद नहीं है तो फिर उनमें जातिगत भेद क्यों क्या ब्राह्मण की नसों में दूध बहता है नहीं ना-

"हमारे कैसे लहू तुम्हारे कैसे दूध।
तुम कैसे ब्राह्मण पांडे हम कैसे सूद।"

फिर कहते है कि ब्राह्मण और शूद्र दोनों ही ईश्वर की एक ज्योति से उत्पन्न हुए है। दोनों की उत्पत्ति का कारण एक बूंद ही है-

"एक बूंद एक मल मुतर
एक चाम एक गुदा।
एक ज्योति थे सब जग
कौन को ब्राह्मण को सूद्र।"

सिद्धांत रूप में सत्य तो यह है कि ना कोई जन्म से ऊंचा है और ना कोई नीचे क्योंकि सब के साधन और साध्य समान ही है-

"नहीं कोई ऊंचा नहीं कोई नीचा।
जाकी का पंडित ओहि का सींचा।"३

अगर ब्राह्मण अपने को यह उनकी भूल है चाहे ब्राह्मण हो या शुद्र दोनों इस धरातल पर मां के पेट से ही जन्म लेते है फिर उनमें जातिगत विषमता कहा से होती है कबीर प्रहार करते हुए कहते है।

हिंदू मुसलमान भेदभाव का खंडन भी कबीर ने दृढ़ता से किया यदि ईश्वर को ही मुस्लिम भेद स्वीकार होता तो हिंदू के माथे पर जन्मतिथि त्रिपुंड खींचा होता और तुर्की ने के विदाई में स्थित शिशु का खतना हो गया होता एक ही ईश्वर ने एक ही मिट्टी से अनेक प्रकार के घरों की रचना की है। जैसे कुम्हार मिट्टी के माध्यम से ही अलग-अलग आकार के बर्तन बनाते है उसी प्रकार प्रभु ने भी अलग-अलग प्रकार के हमें बनाया है। कबीर दास भी उनका विरोध करते हुए कहते हैं-

"हिंदू कहे मोहि राम पियारा।
तु रक कहे रही माना।
आपस मह लड़ी लड़ी मूऐ।
मर कर काहो ना जाना।"४

इस जातियों में सद्भाव उत्पन्न करने में कबीर का योगदान महत्वपूर्ण है कबीर ने अपने सहज भेदभाव हीन [illegible] मन में आडंबर के समान हिंदू मुस्लिम का भेद है स्वीकार नहीं किया उनका कहना है कि दोनों उसी परमात्मा को एक रूप [illegible] है उन्होंने पूरे समाज को पूरे संसार को पूरी मानवीय समाज को एक ही परिवार में बांधने की कोशिश की है-

"पवन एक ही पानी,
एक ज्योति संसार।

हिंदू मुसलमान के पारस्परिक भेद को मूर्खतापूर्ण बताते हुए कबीर कहते हैं-

गहना एक कनक ते, गहना ता मैं भावना दूजा।
कहानी सुनाना को तू ही कर पाते, एक नेवाज एक पूजा।।६

कबीर ने भेदभाव वहीं रोड़ी मुक्त धर्म में जाति भेद के समान हिंदू-मुस्लिम का भेद ही स्वीकार नहीं किया बल्कि कबीर कहते हैं कि दोनों एक ही पालनहार के संतान हैं यह हिंदू और तुरक का भेद ईश्वर संपन्न होकर मनुष्य के द्वारा माना हुआ है-

"जो तू तू रख तुर्की न जाया।
तो भीतर खतना क्यों ना कराया।।"

इस प्रकार का भेद ईश्वर खुद होता तो हिंदू के मस्तक पर त्रिपुटी गर्भ उत्पत्ति से ही लगा होता और मुसलमान को सुन्नत गर्भ में ही हो जाती।

कबीर का स्पष्ट उद्बोधन है कि हिंदू और मुसलमानों का निर्माता तथा प्राप्य एक ही हैं और सत्य तो यह है कि पूजा और नमाज भी एक साधना के ही 2 नाम हैं वही महादेव वही महमद ब्रह्मा आदम कहियो तू हिंदुत्व पूर्वा राह में एक जमीन पर रही हो।

मुसलमान दिन भर रोजा रखकर रात को यदि ग्लोरिया करके ईश्वर को प्रसन्न करना चाहे तो यह मेरा भ्रम है। ईश्वर इसे प्रसन्न होने वाला नहीं है व समाज में व्याप्त बुराइयों के खुद आलोचक है किंतु उनकी आलोचना सुधार भावना से प्रेरित हैं वे साफ शब्दों में कहते हैं कि हिंदू और मुसलमान दोनों को सही मार्ग नहीं मिला है-

"अरे इन दोनों रह ना पाए।
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहे घर ही में करे सगाई।"

कबीर साफ कहते हैं कि हिंदू मुसलमान ब्राह्मण शूद्र आदि में कोई भेद नहीं है वक्त किसी भी जाति का है हरि का भजन सो हरि का होई।

कबीर दास जी भेया नबरों का विरोध करते हैं सामान्य जनता को समझाते हुए कहते हैं कि मूर्ति पूजा जपमाला और तिलक लगाने से भगवान नहीं मिलता इससे तो अच्छा है कि घर की चक्की को पूजा जाए-

"पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजू पहाड़"
"आला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुंह माही।"
"मुंड मुंड आए हरि मिले सब कोई ले ही मुंडाई"

कबीर एक महान युग प्रवर्तक थे। युग की गतिविधि पर उनकी नजर थी।इस कारण उसने समय की परिस्थिति को देखकर समझ लिया था कि मानव धर्म के ठेकेदारों के चक्कर में पड़कर धर्मों के सहायक रूप को भूल बैठा लोग धर्म एवं समाज में व्याप्त बाहरी आडंबर का खंडन आवश्यक है उनकी दृष्टि में जगत में मिथ्या डंबर फैलाने वाला महत पंडित थे इसलिए कबीर ने समय-समय पर इन सब का विरोध किया। कबीर भगवान को अन्यत्र नहीं अपने पास ही पाते थे, कबीर की पवित्र वाणी आत्मा को पवित्र बना देती है कबीर ने हमें कड़वी दवा पिलाई है और हमारे लोगों को हमेशा के लिए मिटाने का सफल प्रयत्न किया है कबीर का कड़वापन अवश्य था परंतु वह आत्महत्या के लिए थी मानवता हमेशा अपना कल्याणकारी मार्ग ढूंढती हैं इसी प्रकार कबीर एक समाज सुधारक है।

संदर्भ ग्रंथ-
(१) कबीर ग्रंथावली श्यामसुंदर दास
(२) कबीर ग्रंथावली आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

डॉ. प्रफुल्लाबहन पटेल